पांच कल्पों में से एक है

लक्ष्मीप्रिय

''एकाक्षी नारियल''

नारियल शब्द से सभी लोग परिचित हैं। नारियल, नारिकेल, कोला, कोकोनट, गरी, गोला, खोपरा, श्रीफल आदि इसी के नाम हैं। (श्री फल-बेल को भी कहते हैं और समुद्रतट पर पाये जाने वाले, ठीक नारियल की रूपरेखा में, बड़ी इलायची के बराबर होने वाले एक अन्य फल को भी 'श्रीफल' कहते हैं) भारतीय-अध्यात्म में यह एक शुभ वनस्पति और पूजा-पाठ आदि में प्रयुक्त होने वाला पवित्र फल है। इसकी रचना विचित्र होती है। फलों में बेल और बादाम सर्वाधिक कठोर आवरणधारी फल माने गये हैं। परन्तु नारियल इनसे भी अधिक कठोर आवरण में रहता है।

भारतीय-संस्कृति में नारियल बहुत शुभ, पवित्र और कल्याणकारी माना जाता है। पूजा-पाठ के अवसर पर, देवताओं को नैवेद्य में, हवन-यज्ञ आदि में नारियल का उपयोग होता है। भेंट, उपहार, तिलक, मंगल कलश, फलाहार औषधि के सन्दर्भ में भी यह फल प्रयुक्त होता है।

पौराणिक कथा-

पौराणिक मान्यता है कि नारियल की रचना ब्रह्माजी ने नहीं की, बल्कि यह विश्वामित्र मुनि की सृष्टि है। प्रसिद्ध है कि एक बार ब्रह्माजी और विश्वामित्र में विवाद हो गया। ब्रह्माजी अखिल सृष्टि के रचनाकार हैं। सम्पूर्ण जगत् में, जो कुछ भी चर-अचर दृष्टिगोचर होता है-जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, कीट - पतंगे और वानर-मानव सब उन्हीं का कृतित्व हैं। परन्तु एक बार विश्वामित्रजी ने, जो अपनी उग्र तपस्या के कारण अलौकिक शक्तियों के स्वामी हो गये थे,। ब्रह्माजी के विरूद्ध घोषणा कर दी- 'तुम पंचतत्त्व से सृष्टि-रचना करते हो, मैं वृक्षों से मानव की उत्पत्ति करूँगा।' और यह कहकर उन्होनें कमंडल से थोड़ा जल लेकर भूमि पर छिड़क दिया। तत्काल वहाँ अंकुर निकले, जो कुछ ही देर की उत्पत्ति हुई। चेहरा बन गया, दो आँखें बन गयीं, मुख बन गया, रोम-राशि के स्थान पर रेशे भी उत्पन्न हो गये। निकट था कि मुण्ड के बाद, शेष शरीर (कवच और हाथ-पैर आदि) का भी निर्माण होता। परन्तु देवताओं ने ब्रह्माजी की गरिमा सुरक्षित रखने के लिए विश्वामित्र से क्षमा-याचना करते हुए उनका कोप शान्त किया और ब्रह्मा-कृत सृष्टि में व्यवधान अथवा विकल्प उत्पन्न न करने की प्रार्थना की। तब विश्वामित्र जी ने शान्त होकर सृष्टि-रचना का कार्य रोक दिया।

भले ही, इस प्रसंग को एक मिथक मान लिया जाय, परन्तु 'नारियल' की उपयोगिता असंदिग्ध है। भारतीय-संस्कृति में नारियल बहुत शुभ, पवित्र और कल्याणकारी माना जाता है। पूजा-पाठ के अवसर पर, देवताओं को नैवेद्य में, हवन-यज्ञ आदि में नारियल का उपयोग होता है। भेंट, उपहार, तिलक, मंगल कलश, फलाहार औषधि के सन्दर्भ में भी यह फल प्रयुक्त होता है। इसके पेड़ समुद्र-तटीय क्षेत्रों में अधिक होते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण उपयोग है- नारियल का आध्यात्मिक साधना में उपयुक्त होना। इस प्रकार अपनी उत्पत्तिगत, विचित्रता, बहुक्षेत्रीय उपयोगिता और आध्यात्मिक प्रभाव के कारण नारियल भारत का सर्वाधिक चर्चित फल है। देखने में भले ही यह कुरूप लगे, परन्तु स्वाद, प्रभाव और गुणवत्ता में यह अनुपम है।

सामान्यतः नारियल के प्रत्येक फल पर रेशा (जटा) उतारने के बाद, टहनी की ओर तीन काले बिन्दु दिख पड़ते हैं। मान्यता है कि इनमें से दो बिन्दु नेत्रों के प्रतीक हैं और एक मुख का! गौर से देखें तो नारियल का गोला मानवाकृति से बहुत कुछ मिलता-जुलता होता है। यहाँ तक कोई विचित्रता नहीं, यह तो नारियल की प्राकृतिक-संरचना है ही। उसकी प्रमुख और अत्यधिक प्रभावशाली विचित्रता यह है कि किसी-किसी गोले पर तीन नहीं, केवल दो बिन्दु पाये जाते हैं। अर्थात् उस पर दो नेत्रों की जगह एक नेत्र और मुख होता है' कहा गया है-एक ऑख वाला नारियल। ऐसा फल बहुत कम प्राप्त होता है। कहीं निकला भी तो, वह बहुत ऊँचे दाम में बिकता है।

महालक्ष्मी प्राप्ति में दुर्लभ वस्तुओं में श्री यंत्र, एकमुखी रूद्राक्ष, एकाक्षी नारियल, दक्षिणावर्त्त शंख, उच्छिष्ट गणपति, श्वेतार्क गणपति आदि प्रमुख है। एकाक्षी नारियल का अपना अलग ही महत्त्व है। यह लक्ष्मी का साक्षात् स्वरूप माना जाता है। यों तो बाजार में नारियल सुलभता से प्राप्त हो जाता है परन्तु सामान्यतः हर नारियल में दो काले से बिन्दु नजर आते हैं। ये बिन्दु ही आँख कहलाते हैं, अर्थात् नारियल की आँख। परन्तु बहुत ही कम अर्थात् न्युनतम मात्रा में ऐसे नारियल भी प्रयास करने पर मिल जाते हैं, जिस पर एक ही आँख होती है। वह एकाक्षी नारियल कहा जाता है।

तान्त्रिक ग्रन्थों में एकाक्षी नारियल पर पन्ने के पन्ने भरे पड़े हैं। प्रशंसा की महत्ता का पार नहीं। कहते हैं जिसके घर में एकाक्षी नारियल है उसके घर से लक्ष्मी कभी जा ही नहीं सकती। लक्ष्मी का स्थायी वास उसके यहाँ होता है। लक्ष्मी सुक्त में कहा गया है कि सचर-चर में सब कुछ सम्भव है। परन्तु एकाक्षी नारियल सामान्यतः सुलभ नहीं है। विष्णु पुराण में तो यहाँ तक कहा है कि जिसके घर में मन्त्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त एकाक्षी नारियल है, उसके घर में स्थायी रूप से अटूट लक्ष्मी का निवास रहता है। दीपावली के अवसर पर जो व्यक्ति लक्ष्मी की मूर्ति के समक्ष एकाक्षी नारियल रखकर उसकी पूजा करता है उसके जीवन में भौतिक दृष्टि से अभाव रहना सम्भव नहीं है।

दुर्लभ स्फटिकं हारं दुर्लभ पारदं शिवं।
दुर्लभो वपु एकाक्षी नारिकेलश्च दुर्लभम्।।

अर्थात् विश्व में तीन वस्तुएं मिलना अत्यन्त दुर्लभ है जिनमें स्फटिक मणियों की माला, पारद शिवलिंग और एकाक्षी नारियल।

एक बार मुझे गया में एक स्वामी गेरुवा वस्त्रधारी मिले उनसे बातचीत हुई, एकाक्षी नारियल पर प्रसंग आने पर उन्होनें कहा कि व्यक्ति का जीवन जितना कलुषित हो, भाग्य चाहे जितना निर्बल हो परन्तु यदि उसके घर में एकाक्षी नारियल हो तो जीवन में अनायास ही वैभव, अतुल सम्पदा, यश, मान, सम्मान, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य और भौतिक सुख प्राप्त होने लगते हैं।

आप अपने घर में एकाक्षी नारियल स्थापित करें, उससे पूर्व यह ज्ञात करें कि वह एकाक्षी नारियल असली हो। कारण कि बाजार में आजकल नकली एकाक्षी नारियल भी बहुतायत से मिलने लगे हैं। कुछ घुमक्कड़ साधु नारियल पर सिंदूर लगा कर पूजा के समान दिखाई देने लगता है ऐसा बना देते हैं जिससे उसकी पहचान नहीं होती कि वह असली है या नहीं।

नर जाति का एकाक्षी मन्त्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त, मन्त्र चैतन्य भी होना आवश्यक है। जिससे वह पूरा लाभ दे सके।

एकाक्षी नारियल के लाभ-

(1) ऐसा नारियल स्थायी सम्पत्ति, ऐश्वर्य, आनन्द देता है।

(2) इसे सुंघाने मात्र से स्त्री गर्भ के कष्ट से मुक्ति पा लेती है तथा सरलता से प्रसव होता है।

(3) जिस घर में पूजित नारियल है, उस घर के सदस्यों पर तान्त्रिक दुष्प्रभाव कभी नहीं होता।

(4) वन्ध्या स्त्री को ऋतु स्नान के बाद एकाक्षी नारियल को धो कर उसका घोल पिलाने से सन्तान होती है।

(5) यदि किसी स्त्री या पुरूष पर भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी का प्रभाव हो तो उसकी गोद में एकाक्षी नारियल रखने से भूत-प्रेत बाधा से मुक्त हो जाता है।

(6) श्री फल को 7 बार पानी में डुबोकर 7 बार ही मन्त्र पढ़ें, फिर पानी को घर में छींटनें से भूत-प्रेतों का उपद्रव शांत हो जाता है।

(7) यदि मुकदमें में विजय प्राप्त करनी हो तो रविवार को उस पर विरोधी का नाम लेकर लाल कनेर का फूल रख दें और जिस दिन न्यायालय में जाना हो उस दिन वह फूल अपने साथ लेकर जाएँ तो सारी स्थिति अपने अनुकूल हो जाती है।

(8) लाल कनेर का फूल लेकर दक्षिण दिशा में बैठकर शत्रु का नाम लेते हुए एक माला फेरें, फूल शत्रु के सामने फैंकें तो उस शत्रु का नाश हो जाता है।

(9) जिसे वश में करना हो उसका नाम अष्टगंध से इस नारियल पर शुक्रवार को लिख दें तो एक सप्ताह के भीतर-भीतर वह स्त्री या पुरूष वश में हो जाता है।

(10) जहाँ ऐसा नारियल होता है उस पर चन्दन, केशर, रोली, मिलाकर उसका तिलक ललाट पर कर व्यक्ति जहां भी जाता है वहीं उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

(11) जिस घर में एकाक्षी नारियल होता है वहॉं स्वयं लक्ष्मी वास करती है। रोग-शोक, दुःख, कष्ट, विपत्ति, दारिद्रय नष्ट होता है एवं मान-सम्मान, प्रतिष्ठा यश प्राप्त होता है। व्यापार दिनों-दिन बढ़ता जाता है।

मन्त्र-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं एकाक्षाय श्री फलाय भगवते विश्व रूपाय
सर्व योगेश्वराय त्रैलोक्य वश्य कार्य प्रदाय नमः।

प्रथमतः दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें अर्थात् अत्राध विक्रमाब्धे महा मंगलाय फलप्रदे, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे इष्ट सिद्धये बहुधर प्राप्तये एकाक्षी श्रीफल पूजनं महंकरिष्यामि। इस प्रकार कह कर पानी छोड़ दें, फिर उपरोक्त मन्त्र बोलते हुए पंचामृत से अभिषेक करें। इष्ट द्रव स्वर्ण की या मूंगे की या रूद्राक्ष की माला से जाप आरम्भ करें। जप 12,500 हो जाए, फिर नित्य प्रति एक माला (108) का जाप करें। दीपावली व ग्रहण के समय पूजन करें।

साधक पूजा काल में शुद्धता, पवित्रता, ब्रह्मचर्य का पालन करें। शुद्ध घी का दीपक जलाएँ, अगरबत्ती, धूपादि करें।

अन्य मन्त्र-

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्मी स्व रूपाय एकाक्षी नारिकेलाय नमः।
सर्व सिद्धि कुरू कुरू स्वाहा ।

यह मन्त्र रेशमी कपड़े पर अष्टगंध या केशर से लिखे अनार की कलम से, जिस वस्त्र पर एकाक्षी श्री फल रखा जाए, मन्त्र से प्रातः और सन्ध्या को अष्टद्रव्य से पूजा करें, मूल मन्त्र की एक माला जपें। ऐसा करने पर जातक ऋण से मुक्त हो जाता है तथा व्यापार में आशातीत सफलता प्राप्त होती है।

अन्य मन्त्र-

''ॐ ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं श्रीं अक्षय कुबेराय प्राप्त्यर्थ
एकाक्षी नारिकेलाय नमः ।''

यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। प्रातः स्नान कर, शुद्ध धुले वस्त्र पहनकर अपने मुँह के सामने थाली में एकाक्षी नारियल रख दें, उसे दूध से स्नान करवायें, फिर शुद्ध जल से धोकर पुनः दूसरी थाली में स्थापित कर पंचोपचार पूजन करें। इसके बाद उपरोक्त मन्त्र की नित्य 19 माला का जाप मूंगे की या रूद्राक्ष की माला से करें। यह प्रयोग 11 दिन का है तथा प्रयोग की समाप्ति पर स्वयं लक्ष्मी दर्शन सम्भव है और जीवन में बहुमुखी प्रगति होती है।

अन्य प्रयोग-

शनिवार की शाम को इस नारियल को कांस्य पात्र में स्थापित करें और उसके सामने तेल का दीपक जलाकर इसे आमन्त्रित करें कि हे एकाक्षी नारियल ! आप मेरा कार्य सिद्ध करें।

दूसरे दिन प्रातः सूर्योदय के समय फिर जल से स्नान करवाकर थाली में स्थापित कर पंचोपचार से पूजन कर उस पर कुंकुम से त्रिशूल बनाएँ और उसकी पूजा करें। 11 माला नित्य जाप करें।

प्राण-प्रतिष्ठित एवं सिद्ध एकाक्षी नारियल से बंधन से मुक्ति, व्यवसायिक उन्नति, वशीकरण, परीक्षा में सफलता, मुकदमें में विजय, इच्छा पूर्ति में सहायता मिलती है।

ॐ नर एकाक्षी नारिकेलाय मम कार्य शीघ्र सिद्ध कुरू नमः ।

एकाक्षी नारियल न्यौछावर राशि– 2100/–

◆◆◆